एक शिक्षक सोचता है...

सुरक्षा रावत
कला अध्यापक, राजकीय इन्टर कॉलेज, श्रीकल्खल, उत्तरकाशी।

मेरा सरकारी स्कूल उत्तरकाशी से करीब 60 किलोमीटर की दूरी पर, मुख्य सड़क से 2-3 किलोमीटर अन्दर स्थित है। सीधी चढ़ाई है और स्कूल कुछ गाँवों के बीच में है। आसपास खूबसूरत पहाड़ हैं जिन पर मवेशी चरते रहते हैं।

मैं पिछली अक्तूबर में कला–अध्यापक के तौर पर नियुक्त हुआ और कला तथा संस्कृति का काम मेरे जिम्मे है। थियेटर के साथ मेरा हमेशा से ही करीबी रिश्ता रहा है और मेरी इस दिलचस्पी ने मुझे मेरे विद्यार्थियों के नजदीक आने में मदद की। इस इलाके में मूलभूत सुविधाओं का भी अभाव है लेकिन प्रत्येक पहाड़ पर मोबाइल टावर हैं। बच्चों के पास कला से सम्बद्ध सामग्री हो चाहे न हो, उनमें से प्रत्येक के पास मोबाइल तो अवश्य था। इसलिए पिछले साल के दौरान मैंने अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा अपनी कक्षाओं के लिए कला से सम्बद्ध सामग्री जुटाने में लगाई।

सर्दियों की धूप में बच्चे और मैं विचार–विमर्श के लिए एकत्र हुए। हमने परम्परा से हटते हुए, कक्षा के कमरे से बाहर आकर बातें कीं और माहौल बहुत ही सुखद हो गया। कक्षा 6 से 12 में करीब 350 बच्चे थे और कभी–कभी मैं एक ही समय पर एक से अधिक कक्षा के बच्चों को पढ़ा रहा होता था। हमें एहसास भी नहीं होता था कि वक्त कब बीत गया – बच्चे अपने काम में इतने मगन हो जाते थे कि वे भोजनावकाश के बाद तक भी काम में लगे रहते।

अब से पहले बच्चों के लिए कला गणित जैसे ही किसी भी अन्य विषय की तरह थी और वे बहुत ही यांत्रिक ढंग से बस पत्थर या फूल या फल आदि बनाते रहते थे। मैंने बने–बनाए पाठ्यक्रम से हटकर कुछ अलग और रोचक करने की कोशिश की। हमने तरह–तरह के पेड़–पौधे–जीव बनाए, विशेष तौर से पत्ते। बच्चों ने स्वयं करीब 40-50 किस्म के पत्ते एकत्र किए – सच कहूँ तो स्वयं मैंने हरे रंग के इतने शेड और पत्तों पर ऐसी नाजुक रूपरेखाएँ पहली बार देखीं।

मैंने उन्हें मूल रंगों के बारे में भी सिखाया। लाल तथा पीले के मेल से नारंगी रंग बनने के बारे में बताया, लाल और हरे रंग के मेल से काला रंग बनने की बात या लाल और नीले से बैंजनी रंग बनने की बात भी सिखाई।

मुझे याद है कि जब पिछले साल बहुत समय तक उनके पास कला–सामग्री नहीं थी तो मैंने उन्हें पेंसिलें और पानी के रंग उपलब्ध करवाए। इसका खर्च मुझे ही उठाना पड़ा लेकिन मैं सन्तुष्ट हूँ कि यह सामग्री प्रयोग में लाई गई। इससे रवैये में बड़ा परिवर्तन आया।

नब्बे प्रतिशत बच्चे पहाड़ भी ढंग से नहीं बना पाते थे। वे अपार सुन्दरता की गोद में बैठे थे मगर शानदार पहाड़ों, दूर तक दिखाई देते देवदार के पेड़ों तथा मीलों तक फैली हरियाली ने भी कभी उनके मन में सुन्दरता का विचार पैदा नहीं किया। वे बस तयशुदा पाठ्यक्रम को पूरा करना और इम्तिहान देना चाहते थे। इस बात की किसी को भी चिन्ता नहीं थी कि वे असल में क्या सीख या समझ पाए थे। मेरा उद्देश्य रहा है कि पाठ्यक्रम को ध्यान में रखा जाए लेकिन अन्य सम्बद्ध चीजें भी सिखाई जाएँ – जैसे, कला क्या है और उसका हमारे जीवन में क्या महत्त्व है जैसे प्रश्नों के उत्तर। मेरा प्रयास उनके परिप्रेक्ष्य को बदलने का रहा है। कला एक व्यक्ति के विकास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है, और वह हमारे जीवन, हमारे घर, हमारे वस्त्रों में स्पष्ट तौर पर दिखाई देती है। मेरा उद्देश्य कुछ बच्चों को प्रेरित करने का है कि वे कला को एक पेशे के तौर पर अपनाएँ – लेकिन यह भी है कि वे चाहे जो करें, जीवन में कलात्मक दृष्टिकोण रखें। यह मेरी सच्ची इच्छा है। **अनुवाद:** रमणीक मोहन